INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 16 | ISSUE - 2 | MARCH – 2026

छत्तीसगढ़ के लोकगीत का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ. ज्योतिमा पटेल

प्रस्तावना :–

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण आधार उसके लोकगीत है जो न केवल जनजीवन की अनुभूतियों आशाओं और आकांक्षाओं को स्वर देते है, बल्कि क्षेत्रीय सामाजिक इतिहास के जीवंत दस्तावेज के रूप में भी कार्य करते हैं। लोक संस्कृति अपनी समृद्ध के लिए प्रसिद्ध है। यहीं लोकगीत न केवल मनोरंजन का समाधान है बल्कि वे सामाजिक संरचना धार्मिक आस्थाओं, कृषि जीवन और ऐतिहासिक घटनाओं का भी सजीव चित्रण करते हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य के प्रमुख लोकगीत :–

लोकगीत की परम्परा छत्तीसगढ़ में अत्यंत प्रचीन है जो पीढ़ी मौखिक परम्परा के माध्यम से स्थानांतरित होती रही है। ये गीत जीवन की विभिन परिस्थितियों जैसे जन्म, विवाह, कृषि, श्रम परिवर्तन, पर्व–त्यौहार, प्रेम, विरह भक्ति सामाजिक संघर्षों को अपने स्वर में समेटे हुए है।

लोकगीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं बल्कि वे समाज व्यवहारों आस्थाओं और परम्पराओं के सवांहक है, इनमें स्त्री चेतना प्रकृति के साथ सह–अस्तित्व कृषक जीवन की कठिनाइयाँ धार्मिक विश्वास तथा सामाजिक न्याय की अवधारणाएँ सहज रूप में प्रतिबिंबित होती है। छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोकगीतों जैसे– फाग, करमा, ददरिया, सुआ, पंथी आदि में त्रे की विविधता भाषिक नृत्यात्मक परम्पराएं और सांस्कृतिक अदान–प्रदान की स्पष्ट झलक मिलती है। लोकगीतों का ऐतिहासिक अध्ययन उनके उद्भव विकास और परिवर्तनशील स्वरूप को समझने का अवसर प्रदान करता है। साथ ही सांस्कृतिक दृष्टिकोण से यह विश्लेषण आवश्यक है कि लोकगीत किस प्रकार क्षेत्रीय जनसंख्या की सामूहिक स्मृति लोकगीत किस प्रकार क्षेत्रीय जनसंख्या की सामूहिक स्मृति सामाजिक सांस्कृतिक मूलबोध और पहचान को सरंक्षित रखते हैं। यह अध्याय छत्तीसगढ़के लोकगीतों के प्रकारों उनके सामाजिक–सांस्कृतिक सदंर्भो विषय वस्तु, प्रतीकों और उनके ऐतिहासिक विकास को गंभीरता से विश्लेषित करेगा।

इस प्रका प्रस्तावित अध्ययन यह स्पष्ट करने का प्रयास करेगा कि छत्तीसगढ़ के लोकगीत केवल गायन की शैली नहीं बल्कि सांस्कृतिक उत्तरजीविता सामाजिक संवाद और ऐतिहासिक चेतना के जीवंत माध्यम है, जो समय के बदलते हुए भी अपनी आत्मा को सुरक्षित रखते आये हैं।

छत्तीसगढ़ के लोकगीतों की परम्परा एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य :–

छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति की आत्मा उसके लोकगीत में समाई हुई है। यह खंड छत्तीसगढ़ के लोकगीतों की ऐतिहासिक यात्रा को प्रस्तुत करता है, जिसमें यह स्पष्ट किया जायेगा कि कैसे इन गीतों में कालक्रम के साथ सामाजिक धार्मिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों की आत्मसात करते हुए निरंतरता बनाए रखी।

प्रारंभिक काल से लोकगीतों की उत्पत्ति :–

लोकगीतों की उत्त्पत्ति का इतिहास वैदिक और पूर्व–वैदिक काल से जोड़ा जा सकता है, जब समाज में लिपिबद्ध साहित्य की तुलना में मौखिक परम्पराओं का वर्चस्व था, जनजातीय समूहों और धार्मिक समाजों में जीवन के विविध पक्षों जैसे– कृषि क्षश्रु परिवर्तन धार्मिक अनुष्ठान विवाह जन्म तथा मृत्यु से जुड़े अनुभवों और भावनाओं की गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता था। यह परम्परा मूलतः सामूहिक चेतना और अनुभव की अभिव्यक्ति रही है।

प्रारंभिक संकेत :–

ऐतिहासिक साक्ष्य पौराणिक कथाएं और लाक मान्यताएँ यह संकेत देती है कि छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों में गीतों का उपयोग न केवल मनोरंजन बल्कि आध्यात्मक संवाद सामाजिक शिक्षण और सांस्कृतिक एकजुटता के लिए भी होता रहा है। आरंभिक लोकगीतों में प्रकृति के प्रति कृतिज्ञता देवी देवताओं की स्तुति तथा कृषि जीवन के प्रतीकों की प्रमुखता थी।

जनजातीय प्रभाव :–

गोड़, बैगा, उरांव, कमार, मुरिया आदि जनजातियों के लोकगीतों ने छत्तीसगढ़ की गीत परम्परा की गहराई और विविधता प्रदान की इन गीतों में सादगी भावनात्मक गहराई और सांकेतिकता का अद्भूत समावेश होता है। इन जनजातीय गीतों का उद्देश्य केवल गायन नहीं बल्कि सामूहिक स्मृति इतिहास और परम्परा का संरक्षण भी रहा है।

धार्मिक एवं सामाजिक घटनाओं से जुड़ाव :–

प्रारंभिक लोकगीत समाज की धार्मिक चेतना से भी गहराई से जुड़े हुए थे। सतनाम पंथ और कबीरपंथ जैसे आंदोलनों के प्रभाव में पंथी जैसे गीतों का उद्भव हुआ जो धार्मिक उद्देश्यों और सामाजिक समरसता को भी प्रोत्साहित करते थे।

प्रारंभिक काल के लोकगीत केवल समय व्यतीत करने या उतसव मनाने के साधन नहीं थे बल्कि वे सामाजिक संरचना धार्मिक विश्वास और सामूहिक अनुभवों के दस्तावेज थे। इन गीतों की निरंतरता आज भी ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में देखी जा सकती है, जहाँ परम्परा आधुनिकता का संतुलन लोकगीतों के माध्यम से बना हुआ है।

लोकगायन की मौखिक परम्परा और पीढ़ियों का हस्तांतरण :–

छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति में लोकगायन की मौखिक परम्परा एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह परम्परा केवल गीतों को गाकर प्रस्तुत करने तक सीमित नहीं रही, बलिक यह संस्कृति इतिहास ज्ञान और सामाजिक मूल्यों के अंतःप्रवाह का माध्यम भी रही है। यहाँ लोकगीतों का लिपिबद्ध करने की परम्परा नहीं रही बलिक इन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी श्रुति परम्परा के माध्यम से सुरक्षित और प्रसारित किया गया है। इस मौखिक परम्परा की जीवंतता और स्थायित्व इसकी सामाजिक निरंतर उपयोग और सामूहिक स्मृति पर आधारित रही है।

छत्तीसगढ़ के लोकगीत मुख्यतः सामाजिक अनुष्ठानों कृषि चक्र ऋतु परिवर्तन विवाह जन्म, मृत्युभोज , त्यौहारों और देवी–देवताओं की उपासना के अवसरों पर गाए जाते हैं। इन गीतों का गायन अवसर सामूहिक रूप में होता है, जहाँ वृद्धाजन महिलाएं और बच्चें मिलकर इन गीतों का गायन करते हैं इस प्रक्रिया में बच्चे और युवा पीढ़ी इन गीतों की संरचना ताल लग और निहित भावार्थ को सहज रूप में आत्मसात करते हैं। यहीं प्रक्रिया परमपरा के अंतर्गत पीढ़ियों के बीच ज्ञान और संस्कृति के हंस्तातरण का सशक्त माध्य बनती है।

मौखिक परम्परा की सबसे विशिष्ट विशेषता यह है कि यह समय स्थिर न रहकर समाज की जरूरतों भावनाओं और अनुभवों के अनुरूप परिवर्तित होती रहती है। उदाहरण – कुछ गीतों में नए प्रतीकों, घटनाओं या सामजिक मुद्दों को जोड़ा गया है, जिससे लोकगायन केवल सांस्कृतिक विरासत नहीं बल्कि जीवित संवाद का माध्यम भी बना रहता है। यह लचीलापन और जीवंतता ही लोकगीतों की दीर्घजीविता का कारण है।

छत्तीसगढ़ की प्रसिद्ध लोककलाकार जैसे तेजराम चौरसिया, झाडूराम देवांगन, ममता चंद्रकार और पद्मश्री झल्ली यादव ने भी इस परम्परा को सहेंजने और प्रसारित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनकी गायन शैली गीतों की सरंचना और उनके द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली विषवस्तु में लोक सांस्कृतिक चेतना की गहराई स्पष्ट दिखाई देती है, इनके गीतों में पांरपरिक बुने और समकालीन भावनाएं एक साथ समाहित होती है। जो यह दर्शाती है कि मौखिक परम्परा आज भी उतनी ही सशक्त और प्रभावी है।

इसके अतिरिक्त डॉ. श्यामलाल चतुर्वेदी (2015) द्वारा लिखित छत्तीसगढ़ी लोकसांस्कृतिक नामक ग्रंथ में मौखिक परम्परा को लोकमानस की आत्मा बताया गया है। वे कहते हैं कि जब तक लोकगीत जीवित है तब तक संस्कृति जीवित है, उनका यह कथन इस बात का प्रमाण है कि मौखिक परम्परा न केवल गीतों के संरक्षण का माध्यम है बलिक यह एक सांस्कृतिक आन्दोलन है जो पहचान आस्मिता सामूहिक चेतना से जुड़ा हुआ है।

लोकगीतों के प्रकार एवं उनकी विशेषताएँ

1. फाग गीत– वंसतोंत्सव और प्रेम की अभिव्यक्ति :–

छत्तीसगढ़ के लोकगीतों की विविधता उस क्षेत्र की सांस्कृतिक समृद्धि और जनतीवन की सहजता का प्रमाण है। इनमें से फाग गीतों विशेष रूप से बसंत ऋतु और प्रेम के उत्सव से जुड़ा एक प्रमुख लोकगीत रूप है। इन गीतों की प्रस्तुति मुख्यतः फाल्गुन मास में होली के अवसर पर होती है और यह जन समुदाय के बीच सामूहिक उल्लास, प्रेम, हास्य और संगम का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है।

फाग गीतों की प्रकृति और भावभूमि :–

फाग गीतों की मूल भवना प्रेम हास्य और मिलने से जुड़ी है। ये गीत सामाजिक बंधनों की कुछ समय के लिए शिथिल कर एक खुला सांस्कृतिक मंच प्रदान करते हैं, जहां स्त्री और पुरूष दोनों मिलकर भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हैं। यह अभिव्यक्ति केवल रोमांटिक नहीं होती बलिक उसमें सामाजिक विडम्बनाओं रिश्तों की जटिलताओं और मानवीय संवेदनाओं का गहरा चित्रक भी होता है। कुछ गीतों में पति–पत्नी के संवेदनाओं का गहरा चित्रण भी होता है। कुछ गीतों में पति–पत्नी के रूप में हास्य व्यंग्य के पुट होते हैं, तो कुछ में तिरहिणी नायिका का प्रेमाकुल स्वरूप।

सामाजिक सहभागिता और रचनात्मकता :–

फाग गीत न केवल सांस्कृतिक मनोरंजन का साधन होते है, बल्कि वे समुदाय की एकत्र कर सामाजिक सहयोग और सहभागिता की भावना को भी पुष्ट करते है। इन गीतों के आयोजन में ग्राम्य जन सहभागिता करते है। गीतों को अकसर गाते है और वाद्ययंत्रों के साथ नृत्य प्रस्तुत करते है। ढोकल मंजीरा, हारमोनियम, नगाड़ा जैसे वाद्य इन गीतों की लयबद्ध प्रस्तुति को और भी आकर्षक बना देते हैं।

स्त्रियों की सक्रिय भागीदारी :–

फाग गीतों में स्त्रियों की भागीदारी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ग्रामीण परिवेश में जब अधिकांश सामाजिक मंच पुरूष प्रधान होते है, तक फाग गीत ऐसे सांस्कृतिक अवसर बनते है, जहां स्त्रियाँ खुले रूप से अपनी भावनाएँ हास्य स्पक्ष और प्रेम की अनुभूतियाँ प्रस्तुत करती है। उनके द्वारा गाए जाने वाले दोहे, चौपाइयाँ और संवाद रूप गीत सामाजिक संरचना में उनकी सृजनात्मक भूमिका को रेखांकित करते हैं।

सांस्कृतिक और परम्परा का संवाहन :–

फाग गीतों की परम्परा मौखिक रही है जो पीढ़ियों के माध्यम से संरक्षित होती आई है। यह परम्परा केवल गीतों की नहीं अपितु पूरे एक सांस्कृतिक संदर्भ की होती है, जिसमें परिधान, भाषा, व्यवहार और संगीत सभी का सम्मेलन होता है। इस रूप में फाग गीत छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति की एक जीवन रखते थे। बल्कि वर्तमान समाज को भी सांस्कृतिक रूप से जोड़तें हैं।

फाग गीत छत्तीसगढ़ की ग्रामीण में प्रेम उल्लास हास्य और सामूदायिक मिलन का प्रतीक है ये गीत केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है। बल्कि जनमानस के सांस्कृतिक जीवन में उ नका गहन सामाजिक सांस्कृतिक स्थान है जो लोक संवाद सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक उत्तरजीविता की समृद्ध करते हैं।

करमा गीत आदिवासी संस्कृति कर्मा नृत्य से जुड़ा संगीत :—

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर में करमा गीता का विशेष स्थान है जो विशेष रूप से राजय की आदिवासी जनजातियों गोड़? बैगा, उरांव तथा भूमियों की परम्पराओं से जुड़ा हुआ है। यह गीत कर्मा नृत्य के साथ गाया जाता है जो श्रम प्रकृति और सामाजिक एकता का प्रतीक है। यह लोकगीत न केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम है बलिक सामूहिक चेतना कृषि जीवन शैली और पारंपरिक विश्वासों का जीवंत दस्तावेज भी प्रस्तुत करता है।

करमा गीत मुख्यतः शरद ऋतु में विशेष रूप से भादों मास की पूर्णिमा को मनाए जाने वाले करमा पर्व के अवसर पर गाए जाते हैं। यह पर्व वृक्ष पूजन विशेषकर करम वृक्ष पूजा के साथ जुड़ा होता है, जो जीवन समृद्धि और हरियाली का प्रतीक माना जाता है। इन गीतों की बुने ऋणात्मक होती है ढोल मांदर झांझ जैसे पारंपरिक वाद्ययंत्रों की संगत में गाई जाती है, जिससे वातावरण में उत्सव और आस्था का भाव जागृत होता है।

ददरिया : प्रेम मिलन और विरह की सूक्ष्म भावनाओं की प्रस्तुति :—

छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोकसंगीत परम्परा में ददरिया उपरांत भावनात्मक और लोकप्रिय लोकगीत विद्या है जो प्रेम मिलन और विरह की सूक्ष्म मानवीय भावनाओं की मार्मिक प्रस्तुति के लिए जानी जाती है। ददरिया गीतों की शैली अत्यंत कोमल आत्मीय और संवादात्मक होती है जिससे श्रोताओं के हृदय में भावनाओं की तरंगे सहज रूप से प्रवाहित होती है न केवल सामाजिक संदर्भों को अभिव्यक्त करती ठे ब्ध्लक वयथ्कत्ग्त भावनाओं और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का भी माध्य बनती है। ददरिया गीत प्रायः किशारों और नवयुवकों के बीच संवादात्मक ढंग से गाए जाते है, जिनमें प्रश्नोत्तरी शैली में संवाद होता है। युवक और युवती एक दूसरे से छेड़छाड़ प्रेम के संकेत या विरह के दुख को गीत के माध्यम से प्रकार करते है। इसकी लय कोमल और धीमी होती है। जो श्रोता को गीत के भाव में डुबा देती हैं। इन गीतों का प्रमुख उद्देश्य प्रेम की कोमलता, मिलन की मधुरता और विरह की वेदनाओं को व्यक्त करना होता है।

सुआ गीत स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला गीत सामूहिकता और नारी भाव की झलकः—

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत में सुआ गीत (या सुआ नृत्य) एक अत्यंत लोकप्रिय और विशिष्ट लोकगीत शैली जैसे मुख्यतः स्त्रियों द्वारा सामूहिक रूप से गाया और प्रस्तुति किया जाता है। सुआ का अर्थ होता है तोता और गीत पक्षी रूपी सुआ के माध्यम से नारी मन की भवनाओं कामनाओं और सामाजिक संबंधों की अभिव्यक्ति का प्रतीक बनता है। यह गीत लोक जीवन की सौंदर्यपूर्ण संवेदानाओं और स्त्री दृष्टिकोण को अपूर्ण प्रस्तुति है।

सुआ गीतों की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है—

1. **सामूहिकता और एकता** — सुआ गीत स्त्रियों के सामूहिक सहयोग की भावना को उजागर करते हैं। सामूहिक गायन और नृत्य उनके सामाजिक जुड़ाव ओर सांस्कृतिक संवाद का प्रतीक होता है।
2. **नारी भावों की अभिव्यक्ति** — इन गीतों में नारी की भीतख इच्छाएं प्रेम, त्याग, प्रतीक्षा तथा सौंदर्य — बोध को प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता हैं। तोते के बहाने वे अपने प्रिय, ससुराल, मायके, जीवन के कर्तव्यों और संबंधों की कथा कहती हैं।
3. **कृशि और लोक आजीविका से जुड़ाव** — सुआ गीत धान की कटाई और अन्न की समृद्धि से भी जुड़ा होता है। यह गीत कृषि प्रधान समाज में अन्न देवी और प्रकृति के प्रति आभार प्रकार करने का माध्यम हैं।
4. **सरल भाशा और लयबद्धता** — सुआ गीतों की भाषा छत्तीसगढ़ी होती हैं, जिसमें आम बोलचाल की शैली के साथ—साथ कोमल भाव और लयात्मकता का सुंदर समन्वय मिलता हैं। गीतों की लय धीमी कोमल और मनोहारी होती हैं।

5. **नारी भाक्ति और सांस्कृतिक संरक्षण** – सुआ गीतों के माध्यम से स्त्रियों न केवल अपनी भावनाएं व्यक्त करती है, बल्कि वे पांरपरिक सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक परंपराओं की वाहक भी बनती है। यही नारी सशक्तिकरण का सांसकृतिक रूप हैं।

पंथी गीत : सतनाम पंथ से संबंधित भक्ति गीत सामाजिक सुधारवादी स्तर

पंथी गीत छत्तीसगढ़ी की धार्मिक–सांस्कृतिक परंपरा में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थन रखते ळे, थ्वश्ज्ञैष्ज्ञ रूप से सतनाम पंथ के अनुयायियों के माध्यम से ये गीत गुरू घासीदास के जीवन शिक्षाओं और उनके द्वारा प्रतिपादित सत्य, अहिंसा और समता जैसे मूल्यों का संप्रेषण करते हैं। पंथी गीत न केवल धार्मिक भक्ति का साधन हैं बलिक सामाजिक चेतना, दलित विमर्श और सुधार वादी दुष्टिकोण को भी जनमानस में पंहुचाने का सशक्त माध्यम बने हैं

गुरू घासीदास (1756–1836) ने छत्तीसगढ़ में सामाजिक असमानता जातिगत भेदभाव और छुआछूत के विरूद्ध आंदोलन चलाया। उनके विचारों को लोकभाषा में गीतों और कथाओं के माध्यम से प्रस्तारित करने का परंपरा उनके अनुयायियो ंमें विकसित हुई। पंथी गीतों का उद्भव इसी जनचेतना से हुआ और इन्हें नृत्य के साथ प्रस्तुत किया जाने लगा, जिसे पंथी नृत्य कहा जाता है। यह नृत्य गीत प्रस्तुति न केवल धार्मिक अनुष्ठान का भाग बन गई, बल्कि जनसंवाद और सामाजिक एकजुटता का मंच भी बनी।

अन्य गीत प्रकार : जस गीत, चनैनी, गेड़ी गीत, देवार गीत आदि

छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति विविधता और गहराई से परिपूर्ण है, जिसमें अनेक पांरपरिक गीत शैलयाँ सामाजिक धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पक्षों को अभिव्यक्त करती है। इन गीतों की शैली विषयवस्तु और प्रस्तुति का तरीका उस समुदाय की जीवन शैली आस्था, उतसव और भावनाओं से गहराई से जुड़ा होता हैं। करमा, ददरिया, सुआ और पंथी के अतिरिक्त कुछ अन्य प्रमुख लोकगीत शैलियाँ निम्नानुसार है–

1. जस गीता :–

प्रकृति और उद्देश्य :–

जस गीत मुख्यतः देवी–देवताओं की स्तुति और महिमा के लिए गाए जाते हैं। ये गीत धार्मिक आस्था से जुड़े होते हैं और देवी जंवारा, गौरा–गौरी, दुर्गा पूजा जैसे अवसरों पर सामूहिक रूप से गाए जाते हैं। ''जस'' शब्द का अर्थ ळे ''यश'' या ''महिमा'' और इन गीतों में देवी की शक्तियों चमत्कारों और भक्तों की आस्था का वर्णन होता है।

सांस्कृतिक महत्व :–

जस गीत विशेष रूप से महिलाओं द्वारा गाए जाते हैं और समूह में स्वर संयोजन के सथ प्रस्तुत किए जाते हैं। इन गीतों में ताल व लय का विशेष ध्यान रखा जाता है और साथ में मृदग, झांझ, ढोलक जैसे वाद्य यंत्र प्रयोग में लाए जाते हैं। इनका स्वरूप भक्ति और उत्सव दोनों को एक साथ समेटे हुए होता हैं।

2. चनैनी :

प्रकृति और उद्देश्यः–

चनैनी गीत पारंपरिक विवाह गीतों की शैली हैं, जो विशेष रूप से शादी विवाह के समय गाए जाते हैं। इनमें विवाह की रस्मों, दुल्हा–दुल्हन की गुणों और हास विनोद की छटा होता हैं। चनैनी गीत लोक जीवन के रीति रिवाजों को जीवंत बनाते हैं।

सांस्कृतिक महत्व :–

इन गीतों में ग्रामीणें स्त्रियों की सामूहिक भादीगदारी देखी जाती है। गीतों के बोल स्थानीय मुहावरों लोकोक्तियों और पारंपरिक प्रतीकों का सुदंर प्रयोग होता हैं। चनैनी गीत न केवल विह के उत्सव को रंगीन बनाते हैं। बल्कि सामाजिक एकजुटता का भी प्रतीक हैं।

3. गेड़ी गीत :—

प्रकृति और उद्देश्य :—

गेड़ी गीत बच्चों और युवाओं द्वारा गेड़री चढ़कर (लकड़ी की लंबी डंडियों पर चलकर) गाए जाने वाले हर्षोल्लास से भरे गीत होते हैं। ये मुख्यतः सावन और भादों मास में गाए जाते हैं जब हरियाली अमावस्या तीज जैसे त्यौहार आते हैं।

सांस्कृतिक महत्व :—

गेड़ी गीतों में साहस, मस्ती, प्राकृकि, सौंदर्य और वर्षा ऋतु की छवियाँ होती हैं। ये गीत बच्चों और युवाओं के बीच परम्परागत खेल—कुद और नृत्य की प्रोत्साहित करते हैं और साथ ही सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखते हैं।

4. देवार गीत :—

प्रकति और उद्देश्य :—

देवार गीत छत्तीसगढ़ के देवार समुदाय के लोकगीत होते हें, जो पारंपरिक कथावाचन, नाच—गान और संगीत से युक्त होते हैं। इन गीतों में सामाजिक कथाएं धार्मिक आख्यान और ऐतिहासिक घटनाएं प्रस्तुत की जाती हैं। देवार कलाकारों का मुख्य कार्य लोककथाओं, लोकनाट्यों और भक्ति रस को जनमानस तक पंहुचाना होता हैं।

सांस्कृतिक महत्व :—

देवार गीतों में कथात्मकता होती है और ये अक्सर वाद्य यंत्रों जैसे रावनहत्या, मंजीरा, नगाड़ा, हारमोंनियम के साथ गाए जाते हैं। इनमें हास्य, व्यग्य, संवाद और धार्मिक संदेशों का अद्भूत मिश्रण देखने को मिलता है। देवार गीत समाज को मनोरंजन के साथ साथ नैतिक शिक्षा देने का कार्य भी करते हैं।

जस गीत, चनैनी, गेड़ीगीत और देवार गीत जैसी विविध लोकगीत शैलियाँ छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक बहुलता और जीवंत परंपरा की प्रमाण हैं। इन गीतों में जहां एक ओर धार्मिकता, सामाजिक मूल्य और पंरपराएँ समाहित है। वही दूसरी ओर उत्सव, प्रेम, हास्य और लोक जीवन की आत्मा भी प्रतिबिंबित होता हैं। ये गीत न केवल मनोरंजन का साधन है बल्कि सामाजिक संवाद और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षक भी हैं।

लोकगीतों में प्रमुख सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों का चित्रण

स्त्री की भूमिका और स्त्री जीवन का चित्रण :—

छत्तीसगढ़ के लोकगीतों में स्त्री की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जो न केवल गीतों की रचनात्मक प्रेरणा के रूप में बल्कि भावनात्मक अभिव्यक्ति की संवहाक के रूप में भी प्रस्तुत होती है। लोकगीतों में स्त्री जीवन के विविध पक्ष— विवाह, प्रेम, विरह, मातृत्व, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और सामाजिक बंधनों का अत्यंत मार्मिक और वास्तविक चित्रण मिलता है। इन गीतों में स्त्री पात्र केवल भावनाओं की प्रतीक नहीं होती, बल्कि वे सांस्कृतिक चेतना सामाजिक पहचान और पारिवारिक व्यवस्था की धुरी के रूप में उभरती हैं।

विवाह और स्त्री की सामाजिक यात्रा :—

विवाह लोकगीतों का एक केंद्रीय विषय है। विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में स्त्री की विदाई उसकी पीड़ा, संकोच और नए घर की कल्पना अत्यंत मार्मिकता से वर्णित होती है। ''बिदा गीत'' और ''सोहर गीत'' जैसे गीत स्त्री के सामाजिक जीवन की उस यात्रा को रेखांकित करते हैं, जहां वह अपने मायके की सीमाओं को छोड़ एक नए संसार में प्रवेश करती हैं। इसमें न केवल उसकी भावनात्मक असुरक्षाएं झलकती हैं। बल्कि उस समाज की संरचना भी परिलक्षित होती है। जिसमें स्त्री को त्याग और समर्पण का पर्याय माना गया है।

प्रेम और विरह की भावनाएं :–

प्रेम और विरह छत्तीसगढ़ी लोकगीतों के अत्यंत भावनात्मक पक्ष है। ददरिया गीतों में युवा स्त्रियों की प्रमाभिव्यक्तियाँ उनकी आकांक्षाएं और विरह की पीड़ा अत्यंत कोमलता से प्रस्तुत की जाती है। इनमें एक ओर जहां प्रेम कमी सामाजिक सीमाओं की चुनौति देने वाला स्वर है, वहीं दूसरी ओर सांस्कृतिक मर्यादाओं और लज्जा का भी स्पष्ट संकेत होता हैं। ऐसे गीत स्त्री के मनोवैज्ञानिक पक्षों की गहन समझ प्रस्तुत करते हैं, जो एक पितृसत्तात्मक समाज में अपने लिये स्थान बनाने का प्रयास करती है।

स्त्री की सामाजिक और पारिवारिक भूमिका :–

लोकगीतों में स्त्री को परिवार की मर्यादा और संस्कृति की वाहिका के रूप में चित्रित किया गया हैं। वह पत्नी वह माँ और बहन के रूप में संबंधों को निभाते हए परिवार और समाज को जोड़ने वाली कड़ी के रूप में देखी जाती हैं। सोहर, लोरिक, जसगीत आदि में मातृत्व, स्त्री–त्याग, सेवा और उसकी सहनशीलता का चित्रण व्यापक रूप से होता हैं। यहां स्त्री केवल घर की रक्षक नहीं, बल्कि परम्पराओं और मूल्यों की संवाहक भी होती है।

नारी सशक्तिकरण के स्तर :–

यद्यपि पारपंरिक लोकगीतों में स्त्री को एक सीमित सामाजिक भूमिका में देखा गया हैं। आधुनिक छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में नारी शसक्तिकरण के स्तर भी उभरने लगे हैं। आत्मसम्मान स्वतंत्र निर्णय क्षमता शिक्षा और आर्थिक स्वंतंत्रता जैसे विषयों पर आधारित गीत नई स्त्री चेतना की चेतना की स्तर देते हैं जो एक बदलते सामाजिक परिदृश्य की ओर संकेत करता है। विशेषकर सुआ गीतों में स्त्रियाँ सामूहिक रूप से अपनी भावनाओं शिकायतों और अपेक्षाओं की प्रस्तुत करती है। जो सामाजिक संवाद का एक प्रभावी माध्यम बनता हैं।

प्रकृति के प्रति जन भावना ऋतु वर्षा पशु पक्षी, नदी–तालाब की उपस्थिति :–

छत्तीसगढ़ की लोकगीतों की प्रकृति न केवल पृष्ठभूमि के रूप में उपस्थित होती है, बल्कि वह एक सजीव पात्र के रूप में जनमानस की अनुभूतियों की संवाहक भी होती हैं। यहां की लोकबुनों में ऋतु परिवर्तन वर्षा की प्रतीक्षा पशु–पक्षियों की व्यवहार और नदियों तालाबों की कलकल बताने लोक चेतना का अनिवार्य हिस्सा हैं। यह प्रकृति प्रेम लोकजीवन के पर्यावरणीय संतुलन तथा परिस्थितिकी के साथ सह अस्तित्व की भावना को स्पष्ट करता हैं।

लोकगीतों में जन जीवन और लोक अभिव्यक्ति

लोकगीतों के माध्यम से सामाजिक संरचना की अभिव्यक्ति – छत्तीसगढ़ी के लोकगीतों में जनजीवन की विविध परतें परिलक्षित होती हैं। ये गीत समाज की मूलभूत संरचना जाते वर्ग, लिंग, पारिवारिक रिश्तों श्रम विभाजन और रिश्तों श्रम–विभाजन और रीति रिवाजों का प्रमाणिक चित्र प्रस्तुत करते हैं। इन गीतों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ी समाज किस प्रकार से विविध सामाजिक संबंधों और भूमिकाओं को परिभाषित करता हैं और किस प्रकार सामूहिक चेतना का निर्माण होता हैं।

जीवन की सहता संघर्श और आनंद का भाव – छत्तीसगढ़ के लोकगीतों में जीवन की सहत प्रवृत्ति दैनिक संघर्षों और उसमें निहित आनंद के भावों का अत्यंत मार्मिक और वास्तविक चित्रण मिलता हैं। ये गीत किसी औपचारिक साहित्यिक अभिव्यक्ति की भांति नहीं बल्कि लोमन की आत्मस्फूर्त भावनाओं की अभिव्यक्ति होते हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परम्परा से प्रसारित होते आए हैं। छत्तीसगढ़ की लोकगीतों में जीवन की त्रिवेणी सहजता संघर्ष और आनंद का संतुलित चित्रण मिलता है। ये गीत केवल मनोरंजन नहीं बल्कि लोक समाज के जीवन दर्शन भावनात्मक गहराई और सामूहिक अनुभवों की सांस्कृतिक दस्तावेज भी है।

जीवन की सहजता – लोकगीतों में जीवन की सहजता सरलता और ग्रामीण जीवन की निदोषिता मुखारित होती हैं। जैसे कि सुआ गीतों में स्त्रियाँ हल्की–फुल्की छेड़छाड़ घरेलू प्रसंग और ऋतुचक्र की बातों के गीतों के माध्यम से सहजता से प्रस्तुत करती हैं। ये गीत यह दर्शातें हें जीवन के छोटे–छोटे प्रंसगों में भी लोक समाज आनंद ढृढ़ लेता हैं एक सुआ गीत की पंक्ति हैं–

''सुआ नाचे गोठ में, दाई बइठे खाए
मन की मोती झरे रे सखी गीत बनाये बाता।''

इसमें घर आंगन की सहजता स्त्री की भावनात्मक ऊष्मा और गीतों के रूप में भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति दिखाई देती हैं।

जीवन संघर्ष :– छत्तीसगढ़ के कृषक जीवन में श्रम और श्रम और संघर्ष का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है जिसे लोकगीतों में अत्यंत सजीवता से दर्शाया गया है। हल जोतते खेत में काम करते या वनोंपज एकत्र करते समय गए जाने वाले गीतों में आर्थिक सामाजिक और प्रकृतिक संघर्ष की झलक मिलती है। कटनी–ओआई गीतों में किसानों की कठिनाई मौसम की अनिश्चितता और श्रम के महत्व को दर्शाते हुए भावनाएं उभरती है। **जैसे**–

घाम होला बड़रे बाबू, पानी नई गिरिस
धान के बिरवा सुखगे मन मा पीरा धरिस।

जीवन का आनंद – संघर्षों के बीच भी लोकगीतों में उल्लास हास्य और आनंद की अनुभूति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। त्यौहारों, विवाह, नामकरण, जन्मोत्सव और पांरपरिक मेलों के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में एक सामूहिक उल्लास की भावना होती है।

विशेष रूप से करमा, ददरिया और फाग गीतों में युवक–युवतियों के बीच हास–परिहास प्रेम संवाद छेड़छाड़ और भावनात्मक लय दिखाई देती है। इन गीतों में नृत्य की गतिशीलता ताल की लय बद्धता और समूह की सहभागिता एक आत्मीय वातावरण स्थित है।

लोकगीतों का ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भ

लोकगीतों में इतिहास का सहज समावेश (घटनाएं युद्ध सामाजिक परिवर्तनों का चित्रण):–

छत्तीसगढ़ के लोकगीत न केवल जनजीवन की अनुभूतियों को स्वर देते है बल्कि इतिहास की घटनाओं सामाजिक उतल–पुथल और सामूदायिक संघर्षों का भी जीवंत दस्तोवज बनकर उभरते हे। इन गीतों में ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण किसी शास्त्रीय इतिहासकार की भांति तथात्मक नहीं होता अपितु भावनाओं स्मृतियाँ और सामूहिक चेतना के रूप में प्रकट होता हैं।

जातीय समुदायों के आत्मबोध और सांस्कृतिक आस्मिता की अभिव्यक्ति :–

छत्तीसगढ़ के लोकगीतों में जातीय समुदायों का आत्मबोध सांस्कृतिक आस्मिता अत्यंत प्रभावशाली रूप से प्रकट होता है। यहां के विभिन्न आदिवासी और परम्परागत जातीय समूह जैसे गोड़, बैगा, मुरिया, हल्बा, कोड़कू, उरांव सरगुजा आदि अपने सांस्कुतिक अनुभवों जीवन दृष्टिकोण संघर्षों और गौरवपूर्ण परम्पराओं को लोकगीतों के माध्यम से संप्रेषित करते हे। ये गीत न केवल उनकी सांस्कृतिक जड़ों की अभिव्यक्त करते हैं बल्कि उन्हें एक साझाा पहचान भी प्रदान करते है, जिससे उनक आस्मिता सुदृढ़ होती है।

प्रमुख प्रयास :–

1. राज्योत्सव का आयोजन
2. जनजातीय संग्रहालय
3. लोककला प्रोत्साहन
4. पर्यटन विकास

निष्कर्ष :–

छत्तीसगढ़ का लोक जीवन अत्यंत समृद्ध विविध और जीवंत है यहां की संस्कृति में प्रकृति परम्परा और समुदाय का गहरा संबंध है।

इतिहास लोककला नृत्य संगीत और त्यौहारों के माध्यम से यह राज्य अपनी विशिष्ट पहचान हुए हैं। आधुनिकता के प्रीााव के बावजूद यदि संरक्षण के प्रयास जारी रहे तो यह सांस्कृतिक विरासत भविष्य में भी सुरक्षित रह सकती है।

संदर्भ :–

1. छत्तीसगढ़ संस्कृति एवं विरासत संस्कारी पोर्टल।
2. छत्तीसगढ़ लोकनृत्य एंव लोक साहित्य।
3. साह हेमलाल पंथी गीतों में।
4. सामाजिक चेतना जनकला अकादमी।
5. मिश्रा देवकी नंदन लोक गीत और लोक आस्था दिल्ली भारतीय।
6. लोक संस्कृति परिषद।

पत्र–पत्रिकांए –

1. उदन्त मार्तण्ड 1826 – भारत का पहला हिन्दी साप्ताहिक।
2. सरस्वती (1900) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित महत्वपूर्ण पत्रिका।
3. हंस (1930) मुंशी प्रेमचंद द्वारा संपादित साहित्यिक पत्रिका।
4. केसरी (1881) – बाल गंगाधर तिलक द्वारा संपादित।
5. हिन्दी प्रदीप (1877) बाल कृष भट्ट द्वारा संपादित।
6. कर्मवीर माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा संपादित।